Subject:- Maithili Date: 17.07.2020

Topic:— हमरा लग रहब उपन्यास

Class:— B.A. Part II (Hons)

By: Dr. Sanjay Kumar Paswan, Assistant Professor, D.B. College Jainagar, L.N.M.U. Darbhanga.

'हमरा लग रहब' श्री प्रभास कुमार चौधरीक एखन धरि प्रकाशित उपन्यास मध्य सर्वश्रेष्ठ रचनाक रूपमे मान्य अछि। एहि मध्य प्रणवक नायकक रूपमे चरित्र-चित्रण भेल अछि। जकर आड़िमे अपेक्षाकृत कथात्मक प्रधानता तथा घटनाक तारतम्य सुनियोजित रहैत अछि। हिनक उपन्यास सभक महत्वपूर्ण बिन्दु थिक युग चेतनाक व्यापक अभिव्यक्ति तथा कथ्यक वैचारिकताक संगहि मनोविश्लेषणात्मकताक आधार पर चरित्रक अंतर्संघर्षक चित्रण। वस्तुतः हिनक उपन्यास रहैत मानवीय मूल्य, नैतिक पतन, कृत्रिम सम्बन्ध बोध तथा कुंठाग्रस्त सामाजिक विवरणक उपन्यास थिक। भ्रष्टाचार जतए वर्तमान पीढ़ीकेँ अभिशप्त कयने अछि ततहि सुविधाभोगी अवसरवादिये आइ युगपुरुष थिक। हिनक अन्य उपन्यास नवारम्भ, राजा-पोखरिमे कतेक मछरी अछि।

'हमरा लग रहब' उपन्यासक नायकक जकर चरित्रक देखबे ओकरा हेतु

अभिशाप बनि जाइत अछि तथा ओ-करा संग रहब केओ स्वीकार नहि करैत अछि। एकर नामकरण तेँहि दि-सि इंगित करैत अछि। एहि मध्य अनेक स्मरणीय पात्रक सृष्टि कएल गेल अछि जाहिमे मार्मिक चित्रण उपन्यासकार भारतीय मातृत्वक प्रतीक रूपमे कएने छथि। परंतु एही उपन्यास-क सर्वश्रेष्ठ चरित्र-सृष्टि थिकीह शीला। शीलाक चरित्रमे उपन्यासकार कुशलता-पूर्वक एक संग नारीक विवशता ओ निर्बलता- प्रेम ओ घृणा,आत्मग्लानि ओ स्वाभिमान, प्रतिशोध, ओ प्रतिहिंसा, एवं प्रणय- भावनाक जेहन सूक्ष्म ओ मनोवैज्ञानिक उद्घात चित्रण कएल अछि, तकरा कलापूर्वक कइला आ संकेत अछि।

'हमरा लग रहब'? मैथिली साहित्यक दुर्लभ मणि सिद्ध होयत। मैथिली साहित्यकेँ गौरवान्वित कर' बला एहि कृतिक प्रणयन लेल उपन्यासकार अभिनन्दनीय थिकाह।

उपन्यास दू भाग मे विभाजित अ-छि- 'खसल जाइत सुग्गी रानी आ हमरा लग रहब'? कथा बिलासपुर सँ शुरू होइत अछि।

सबसँ पहिने मामी एहि लेल जे बैड़ पोलि क' पैध कएलाकेँ। एहि लेल जे ओकर जिनगी मे बैह टा एकटा स्नेहक सम्बन्ध छैक। एहि लेल ओकर जीवनक प्रारम्भ सेहो छैक।

एहि टोल सँ ओकर कथा मामे गाम सँ शुरू होइत छैक। मामाक गाम माने बिलासपुर जकर पूरब, उत्तर आ दछिन मे बागमती छैक आ पश्चिम मे रेलवे लाइन, सभ दिन भोरे आ बाध मे बहराइत छल - जखन ओकर मामा, मामी सुतले रहैत छलैक। परसुक बेल बेर झलफल अन्हारमे श्मसान घाट लग दैत जाइत छल अपन महींस लेने। चुरन मिसर कहैत छलैक जे श्मसान मे भूत, डाइन राति क' नचैत छैक। डरें प्रणवक रोइयाँ ठाढ़ भ' जाइत छैक।

गामक नैंगड़ा मास्टर कें देखिक' सेहो ओकरा रोइयाँ ठाढ़ भ' जाइत छलैक। कसाई छलैक एकदम। प्रणवक टोल खसक' किरक त' ओ गरीब छल, तखन सनीचरी नहि दैत छलैक। सभ दिन प्रणवक स्कूल सँ छुटलाक बाद मामी ओहि नैंगड़ा मास्टर कें श्रापैत छलैक आ प्रणवक देह सोहरैत सुग्गी रानीक खिस्सा कहैत छलैक:

सुग्गी रानी, सुग्गी रानी
कत' जाइ छी।
सांझ भूत मारलक अछि
खसल जाइ छी॥